'पूस की रात'कहानी की प्रासंगिकता

सबनम भुजेल
शोधार्थी, सिक्किम विश्वविद्यालय

सारांश:-
हिंदी साहित्य लेखन में यथार्थवादी चिंतन को विकसित करने में प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' का महत्त्वपूर्ण योगदान है।1930 ई॰ में रचित यह कहानी यथार्थवादी कहानियों में अग्रणीय है। इस कहानी में आर्थिक रूप से जूझते किसान जीवन के संघर्ष को बखूबी अभिव्यक्ति मिली है । जब देश अंग्रेजों की पराधीनता, दमन, शोषण के साथ ईसाई धर्म-संस्कृति एवं स्वराज्य की देशव्यापी लहर से आंदोलित हो रहा था तब प्रेमचंद ने किसानी समस्या को जन मानस के लिए सुलभ कराया और किसान वर्ग की चिंताओं को यथार्थपरक ढंग से अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। पूस की रात कहानी का हल्कू वर्तमान समाज की किसानी जीवन से जूझ रहे आम आदमी का प्रतिनिधित्व करता है,जो लगातार श्रम करते हुए भी अपने जीवन में किसी तरह का कोई सुधार नहीं देखता बल्कि जीवन की आम जरूरतों से भी लगातार वंचित होते रहने की पीड़ा से त्रस्त है | किसान जो अन्न उपजाता है,लोगों की भूख को शांत करता है वही ठंड से अपने को बचाने के लिए कम्बल तक की सुविधा नहीं ले पाता है,मेहनत और श्रम से तैयार फसल के नष्ट हो जाने की स्थिति वह स्वीकार कर लेता है क्योंकि उसे खेतों की रखवाली के लिए ठण्ड में मरना नहीं पड़ेगा | वह एक मजदुर बनने की स्थिति में आने को तैयार होता है पर ठंड से ठिठुरने से बचा रह जायेगा इस बात से उसे तसल्ली मिलती है ,किसान जीवन की यह बड़ी विडंबना है जिसको कहानी में रेखांकित किया गया है | 1930 की प्रकाशित यह कहानी आज भी प्रासंगिक है ,किसान के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया है बल्कि वे अपनी समस्याओं से मुक्ति के लिए जीवन खत्म कर रहे हैं ,जो वर्तमान समाज के निर्मम होने की ओर संकेत करता है |

बीज शब्द:-
यथार्थवाद, किसान जीवन, गरीबी, भारत, वर्ग-समाज, व्यवस्था, जमींदारी प्रथा इत्यादि।

भारत विविधताओं से भरा देश है । प्रकृति और जैव विविधता ही नहीं वरन मानव समाज में भी यह धर्म,जाति,वर्ग सभी स्तरों में यह दिखाई पड़ता है | समाज का एक बड़ा तबका जो जीवन की सम्पूर्ण सुविआधाओं का उपभोग कर रहा है,जिनके कुत्ते बिल्ली भी उसी स्तर का भव्य भोजन पाते हैं वहीँ समाज में एक ऐसा वर्ग भी मौजूद हैं जो मानव जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित है | यह हमारे देश की बड़ी विडंबना है कि अमीरी और गरीबी की खाई दिनोंदिन कम होने की अपेक्षा बढ़ती चली जा रही हैं,इस खाई में जितना बढ़त होगी उतना ही कमज़ोर तबका शोषण,अत्याचार, भ्रष्टाचार से पीड़ित होती रहेंगी । 'पूस की रात' कहानी में प्रेमचंद ने समाज के इन्हीं वर्गों को केंद्र में रखा है | कहानी में प्रसंग है जब हल्कू अपने कुत्ता से कहता है- "क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आये थे। .....यह खेती का मजा है! और एक भगवान ऐसे पड़े हैं जिनके पास जाड़ा जाए तो गर्मी से घबराकर भागे।.....मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटे।"[1] यह समस्या केवल हल्कू की नहीं है बल्कि हल्कू जैसे किसानों की हैं जो आज भी इस समस्या से जूझ रहे हैं। भारत कृषि प्रधान देश है,इसके बावजूद लोग यहाँ भूखों मरते हैं। दो वक्त की रोटी के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैं ।

'पूस की रात' कहानी में हल्कू और गोदान का होरी दोनों की दशाएं एक सी हैं । हल्कू हर साल सेठ साहूकारों से उधार लेता है और अपनी सारी कमाई सूद चुकाने में ही खर्च कर देता है। उसने कंबल खरीदने के लिए जो तीन रुपए बचाकर रखे थे वह भी सूद चुकाने में ही खर्च हो जाता है जिससे वह एक कंबल भी नहीं खरीद पाता है और सर्दी में चिलम के सहारे गुजारा करता है| पूस की रात की कड़कती सर्दी में वह चिलम भी उसका साथ नहीं दे पाता और इस शोषणपरक व्यवस्था के प्रति हल्कू की पत्नी का आक्रोश इन शब्दों में व्यक्त होता है - "न जाने कितनों की बाकी है,जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मरकर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रुपए न दूँगी।-न दूँगी।"[i]यह पीड़ा केवल हल्कू की पत्नी की नहीं बल्कि उस जैसी अनेकों स्त्रियाँ की हैं जो जीवन में छोटे-2 सपनों को भी हकीकत का जामा नहीं पहना पाते हैं | यह केवल प्रेमचंद के समय की समस्या नहीं है बल्कि आज भी यह स्थितियां विद्यमान है,कर्ज न चुका पाने की स्थिति में कई किसान आत्महत्या का सहारा लेने को विवश होते हैं | किसान जिसका जीवन संघर्षों से भरा हुआ होता है,उसके में इनसे भिड़ने की अजस्र स्त्रोत है पर वर्तमान समाज और व्यवस्था के गडमड में किसान लड़ नहीं पाता है और वह घुटने टेकने को विवश होता है |हल्कू के पास किसानी नहीं तो मजदुर होने का विकल्प है वर्तमान किसान उस चयन से भी वंचित है क्योंकि बेबसी और विवशताओं का तो जैसे उससे गाढ़ा रिश्ता है |

कृषक जीवन का यह यथार्थ है कि वह कड़ी मेहनत करता है, जाड़े में ठिठुरता है, जमींदार की गाली सुनता है इसके बावजूद भी उसकी जरूरतें पूरी नहीं होती फिर भी वह काम पर जाता है। इन्हीं परिस्थितियों के कारण वह ठंड में ठिठुरने लगता है और नीलगायों से अपनी फसल की रक्षा भी नहीं कर पाता है। वह खेती करना नहीं छोड़ना चाहता लेकिन इतनी कठिनाइयों में उसका वह विचार निरर्थक सिद्ध होता है। उसके सारे फसल नीलगायें खा जाती है।

व्यवस्था में बैठे लोग 'जय जवान जय किसान' का नारा लगाए फिरते हैं और बाद में वही उन्हें लूटते हैं। उनके प्रति संवेदनहीनता का परिचय देते हैं| भारी संख्या में बैंक का लोन न चुका पाने वाले व्यापारी देश छोड़ भाग जाते हैं और सत्ता उनके खिलाफ कुछ नहीं कर पाती जबकि बेचारे गरीब किसान लोन न चुका पाने की स्थिति में अपनी संपत्ति के कुडकी होने की दशा ,परिवार की बेबसी देखने का साहस नहीं कर पाते और दुनिया से कूच कर जाते हैं|

प्रेमचंद ने तत्कालीन समय की किसानी जीवन की पीड़ा और तकलीफों को बहुत गहराई में महसूस किया है | उनका ग्रामीण जीवन तथा संस्कृति से इतना एकाकार था कि वे स्वयं उसके प्रतीक बन गए थे। इनके संबंध में कमल किशोर गोयनका लिखते हैं- " प्रेमचंद ने कृषक एवं कृषि साहित्य की दुर्दशा पर अपने कई लेखों एवं संपादकीय में समाज का ध्यान आकर्षित किया है। प्रेमचंद के अनुसार किसान एक सीधी, बेजान, दुधारू गाय है।"[ii]

हल्कू अपनी दरिद्रता, असहायता एवं शोषण से ग्रसित होकर भी जीवन जीता है। प्रेमचंद इस दुरावस्था के कारणों का उल्लेख 'प्रेमाश्रम' में करते हैं और लिखते हैं- "उनकी दरिद्रता का उत्तरदायित्व उनपर नहीं बल्कि उन परिस्थितियों पर हैं जिनके अधीन उनका जीवन व्यतीत होता है और वे परिस्थितियाँ क्या है? आपस की फुट, स्वार्थपरता और एक ऐसी संस्था का विकास, जो उनके पाँव की बेड़ी बनी हुई है।"[iii] प्रेमचंद ने हल्कू के माध्यम से एक ग़रीब किसान जीवन की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। यह केवल 1930 ई॰ का यथार्थ नहीं बल्कि आज भी यह समस्याएँ विद्यमान हैं। आज भी गरीब किसान अपने मालिकों, साहूकारों एवं जमींदारों के अत्याचार से ग्रसित हैं। स्वतंत्र प्राप्ति के बाद और भी स्थितियां खराब हुई हैं । उनके अधिकारों पर प्रतिबंध लगने लगा है ,जिससे मोहभंग की स्थितियां पैदा हुई । गरीबी के कारण हल्कू और उसके परिवार विवश और लाचार हो गए। प्रेमचंद लिखते हैं-"चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ भी हो अबकी सो जाऊँगा; पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कंपन होने लगा।"[iv]

प्रेमचंद की सभी कहानियाँ किसी न किसी समस्या को उजागर करती हैं । उनकी रचनाओं में समस्याएँ अपना मार्ग खुद ढूंढ लेती हैं। हर समस्या अपने आप में विशिष्ट नजर आती है और समाज के यथार्थ चित्र को प्रस्तुत करती हैं । 'पूस की रात' कहानी में हल्कू का संघर्ष गोदान से कई ज्यादा कठिन और बड़ा लगता है। होरी के सामने भी गरीबी की

समस्या, ऋण ग्रस्तता और फसल की रक्षा करने जैसी समस्याएँ हैं किंतु एक किसान होने के नाते खेती को लेकर उसके मन में जो भाव है, जो सम्मान है वह उसे मजदूर बनने से मना करता है। वह कहता है- "जो दस रुपए महीने का भी नौकर है, वह भी हमसे अच्छा खाता-पहनता है; लेकिन खेतों को छोड़ा नहीं जाता।"[v] लेकिन हल्कू की स्थिति वैसी नहीं है। वह जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है वह उसके लिए बहुत ही कठिन एवं असहनीय है। एक ओर अर्थ की समस्या दूसरी ठंड की। कृषक जीवन का यह यथार्थ है कि वह कड़ी मेहनत करता है, जाड़े में ठिठुरता है, जमींदार की गाली सुनता है इसके बावजूद भी उसकी जरूरतें पूरी नहीं होती फिर भी वह काम पर जाता है। इन्हीं परिस्थितियों के कारण वह ठंड में ठिठुरने लगता है और नीलगायों से अपनी फसल की रक्षा भी नहीं कर पाता है। वह खेती करना नहीं छोड़ना चाहता लेकिन इतनी कठिनाइयों में उसका वह विचार निरर्थक सिद्ध होता है । उसके सारे फसल नीलगायें खा जाती है। उसे यह बात तब पता चलती है जब मुन्नी आकर कहती है- "सारे खेत का सत्यानाश हो गया है। भला ऐसा भी कोई सोता है।....दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी, पर हल्कू प्रसन्न था। मुन्नी ने चिंतित होकर कहा- अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी। हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा- रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।"[vi]

'रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा' हल्कू का यह वाक्य फसल के खत्म होने की पीड़ा से ज्यादा संतोष का झलकता है जो समय की विडम्बना को चित्रित करता है | प्रेमचंद ने होरी, घीसू, माधव, हल्कू आदि के माध्यम से ऐसे किसान चरित्रों का वर्णन किया है जो आर्थिक रूप से लाचार एवं बेबस है। पूस जैसे ठंड के मौसम में एक कंबल तक खरीदने का पैसा जुगाड़ न कर पाना वाकई किसान जीवन की दुर्दशा को बताता है | प्रेमचंद द्वारा रचित पात्र समय और व्यवस्था के घेरे में अपने को विवश पाते हैं,जीवन की विसंगतियां इस तरह उन पर हावीहैं कि चाह कर भी वे पात्र उनसे उभर नहीं पाते हैं | प्रेमचंद के समय की कहानियां पर आज वर्तमान दौर में यह और ज्यादा प्रासंगिक हो जाती है क्योंकि विकास के विभिन्न घटकों के आ जाने के बाद भी किसानी जीवन की स्थिति ज्यों की त्यों है बल्कि आज उनकी समस्याएं और विकट हुई हैं |

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. झारी, विजयदेव. (संपा.). (2014). हिंदी की कालजयी कहानियाँ. नई दिल्ली : लिट्रेसी हाउस. पृ. 80
2. शर्मा, सरोजिनी (संपा.). (1987). आधुनिक कहानी संग्रह. आगरा : केंद्रीय हिंदी संस्थान. पृ.16
3. गोयनका, कमल किशोर. (2018). भारतीय साहित्य के निर्माता प्रेमचंद. नई दिल्ली : साहित्य अकादमी. पृ. 57
4. गोयनका, कमल किशोर. (2018). भारतीय साहित्य के निर्माता प्रेमचंद. प्रेमाश्रम. नई दिल्ली : साहित्य अकादमी. पृ. 58
5. झारी, विजयदेव. (संपा.). (2014). हिंदी की कालजयी कहानियाँ. नई दिल्ली : लिट्रेसी हाउस. पृ. 81
6. प्रेमचंद. (2004) गोदान. इलाहाबाद : सुमित्र प्रकाशन. पृ. 16
7. शर्मा, सरोजिनी (संपा.). (1987). आधुनिक कहानी संग्रह. आगरा : केंद्रीय हिंदी संस्थान. पृ.17

हिन्दी

हिन्दी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द 'सिंधु' से माना जाता है। 'सिंधु' सिंधु नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिंधु शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदू', हिंदी और फ़िर 'हिंद' हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिंद शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द+ईक) 'हिंदीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। यूनानी शब्द 'इन्डिका' या लैटिन 'इंडेया' या अंग्रेज़ी शब्द 'इंडिया' आदि इस 'हिंदीक' के ही दूसरे रूप हैं। हिंदी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफ़ुद्दीन यज्दी' के 'जफ़रनामा'(1424) में मिलता है।